International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XII, Issue II, March – April 2025 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.997

"बैगा जनजाति के विकास की भावी संभावनाओं का अध्ययन"

डॉ राम कुमार उसरेठे
सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय महाविद्यालय चौरई, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.)

सारांशः– भारत सरकार ने मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति समूह में रखा है। विशेष पिछड़ी जनजाति होने के कारण बैगा जनजाति को सरकार का संरक्षण प्राप्त है जिसके फलस्वरूप इस जनजाति के लिए अनेक शासकीय योजनाये चलाई जा रही है। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन है उतनी ही प्राचीन उनकी संस्कृति भी है। बैगा जनजाति का मुख्य व्यवसाय वनोपज संग्रह, पशुपालन, एवं खेती करना है। वर्तमान में बैगा जनजाति की संस्कृति में भी आधुनिकता का समावेश हो रहा है। बैगा अब सघन वन, कंदराओं तथा शिकार को छोड़ कर मैदानी क्षेत्रों में रहना तथा कृषि कार्य करना प्रारंभ कर रहे है। किन्तु बैगा अपने आप को जंगल का राजा और प्रथम मानव मानते है। बैगाओं का ही जन्म सर्वप्रथम हुआ है, वे ही पृथ्वी मे मानव जाति को लाने वाले है उनका सम्बन्ध प्रथम मानव से है। इस शोध पत्र के माध्यम से बैगा जनजाति के विकास की भावी संभावनाओं के अध्ययन का विश्लेषण किया किया गया है। बालाघाट जिले के स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर मध्य प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा का विकास किया जा सकता है।

मुख्यशब्दः– बैगा जनजाति, विकास, विशेष पिछड़ी जनजाति बालाघाट जिला ।

प्रस्तावनाः–

भारत में विश्व की सर्वाधिक जनजातियाँ निवास करती है। इसलिए भारत को जनजातियों की ''खान'' भी कहा जाता है। भारत की विभिन्नतायुक्त समृद्ध संस्कृति में जनजातीय संस्कृति का विशेष महत्व एवं स्थान है।

भारत की अधिकांश जनजाति मध्यप्रदेश में निवास करनी है। मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों में गोण्ड, भील, भिलाला, बारेला, कोल, सहरिया, भारिया, कमार, बैगा, कोरकू विंझवार, मवासी आदि है।

बैगा मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजाति है, यह मध्यप्रदेश के डिण्डोरी, मण्डला. बालाघाट, अनुपपुर एवं शहडोल जिलो में निवास करती है। बैगा जनजाति समाज आधुनिक समाज की तुलना में प्रगति के भौतिक मानदण्डों के अनुसार पिछड़ा हुआ है तथा अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। यही कारण है कि भारत सरकार ने बैगा जनजाति को इसके विशेष निवास क्षेत्र में विशेष पिछड़ी जनजाति की मान्यता दी है। एवं इसके निवास क्षेत्र को अनुसूचित क्षेत्र घोषित किया गया है। सरकार नें बैगा जनजाति के विकास के लिए विशेष बैगा विकास अभिकरण की स्थापना की है।

सरकारी प्रयास एवं बाहरी समाज के संपर्क से बैगा जनजाति की परंपरागत जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है। बैगा समुदाय अपनी विशिष्ट संस्कृति, समाज व्यवस्था और रीति–रिवाजों के साथ विकसित हो रहा है। अब इन क्षेत्र में भी नगरीकरण एवं औद्योगिकरण की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। आधुनिकीकरण का स्पष्ट प्रभाव बैगा जनजाति पर दिखाई दे रहा है। यह जनजाति आज ऐसे मोड पर खड़ी है जो सक्रमण काल से गुजर रही है। इसने पिछले दो–तीन दशकों में बहुत परिवर्तन देखा है। संचार, आवागमन, शहरीकरण उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, शिक्षा, योजनाबद्ध विकास कार्यक्रम एवं औद्योगिकीकरण ने इनके जीवन में तीज परिवर्तन के अवसर उपस्थित किये है। कभी जंगलो और दूर पहाड़ी में रहने वाले व जनजातीय लोग जो सभ्यता के संपर्क से कटे हुए थे आज आधुनिक समाज के निकट आ गए है उनका भाग्य देश के अन्य समूहों के नाम के साथ जुड़ गया है परिवर्तन की एक ही दिशा है लेकिन आज परिवर्तन की जिस प्रक्रिया से बैगा जनजाति गुजर रही है और आधुनिकीकरण का जो प्रभाव उन पर पड़ रहा है वह अन्य समाजों से भिन्न है।

शोध समस्या का चयन–:

आधुनिकीकरण की नवीन प्रक्रिया में जनजातीय समाज किस हद तक अपने को सामाजिक विघटन से बचाते हुए एक स्वस्थ्य समाज के रूप में परिवर्तित कर सकेंगे इसका उत्तर भविष्य के गर्भ में है।

आधुनिकीकरण के प्रभाव से उत्पन्न समस्याओं एवं उनके समाधान हेतु उपायों एवं इसके सकारात्मक प्रभावों को बैगा

जनजाति के विकास हेतु उचित सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध कार्य किया गया।

संबंधित साहित्य का अध्ययन–:
साहित्य के पुनरावलोकन द्वारा अपने अध्ययन विषय से सम्बधित पूर्व जानकारी प्राप्त की गई है।

ब्रम्हादेव शर्मा, (2001) ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि अनुसूचित क्षेत्रों के संसाधनो पर ग्रामसभा हर तरह के निर्णय लेने हेतु संवैधानिक रूप से सक्षम है। अतः जल, जंगल और जमीन पर जनजातियों को अधिकार सौंपे जावे। शासन द्वारा स्थानीय संसाधनों का दोहन ग्राम पंचायत की समहति से तथा लाभ में जनजातियों की हिस्सेदारी हो। शिवाकान्त मिश्रा,(2002) ने अपने शोध प्रबंध में मध्यप्रदेश की वैगाचक की बैगा जनजाति में सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिकीय परिवर्तन एवं सामजस्य की समस्याएं को प्रस्तुत किया है। साथ ही उचित समायोजन के साथ विकास का प्रतिमान भी बताया है। बसंत निरगुणे (2005) ने जनजातीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों का वर्णन एवं विश्लेषण कर जनजातीय संस्कृति की वर्तमान दशा को प्रस्तुत किया है। रामकुमार उसरेठे, (2007) ने अपने लघुशोध प्रबंध में बालाघाट जिले की बैहर तहसील की बैगा जनजाति की वर्तमान दशा एवं भावी विकास की सम्भावनाओं का सूक्ष्म अवलोकन प्रस्तुत किया है। विजय चौरसिया, (2009) ने अपनी पुस्तक में डिण्डोरी जिले की बैगा जनजाति की जीवनशैली, संस्कार, लोकनृत्य, गीत एवं आर्थिक आधार को प्रस्तुत करते हुये इस जनजाति की विकासपरकता को स्पष्ट किया है।

अनुसंधान कार्य के उद्देश्य–:
स्थानीय संसाधनों के माध्यम से बैगा जनजाति की विकास की भावी संभावनाओं का आकलन करना।

शोध–विधि एवं अध्ययन क्षेत्र–:
अध्ययन क्षेत्र का परिचय– प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश का बालाघाट जिला है।

तथ्यों का संकलन– प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में अवलोकन एवं द्वितीय तथ्यों का उपयोग किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है–

बालाघाट जिले में प्राकृतिक रूप से प्रदत्त स्थानीय संसाधनों के समुचित प्रबंधन एवं उपयोग से बैगा जनजाति का आर्थिक विकास किया जा सकता है। शोध के दौरान इन संसाधनो एवं इनके उपयोग से बैगा जनजाति विकास की सम्भावनाओं को रेखांकित किया गया है जो निम्नलिखित है–

(1) वनों में बैगा विकास को सम्भावनाएँ–
बालाघाट जिले के बैगा निवास क्षेत्र बैहर परिक्षेत्र में बहुत बड़े भाग में सघन वन लगे हुये है.इन वनों से बैगा परम्परागत रूप से वनोपज प्राप्त करते रहे है। जंगलो की कटाई के कारण बैगाओ के वनोपज संग्रह में कमी आई है। वनोपज में मुख्य रूप से हर्रा, बहेड़ा, चिरौंजी, महुआ, शहद, तेन्दुपत्ता, मौसमी फल व जड़ी बूटियो का संग्रह किया जाता है। इन वनों में खाली पड़े भूखण्डों पर अन्य फलदार वृक्ष जैसे– आम, अमरूद, जामुन, नीबू आदि लगाकर बैगाओं के वनोपज संग्रह को बढ़ाया जा सकता है। वनो से पालतु दुधारू पशुओ के लिए घास प्राप्त की जा सकती है एवं इन वन वृक्षो से सुखकर गिरी पत्तियो से केंचुआ खाद बनाकर कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

(2) कृषि में बैगा विकास की सम्भावनाएँ–
बैगा अब स्थायी कृषि की ओर अग्रसर है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि में सुधार की काफी सम्भावनाएँ है। बैहर में अधिकांश कृषि भूमि पहाड़ी के नीचे समतल क्षेत्र में फैली हुई है। यहां छोटे–बड़े तालाबों एवं नदियों में स्टापडेम का निर्माण कर सिंचाई के लिए पानी एकत्र किया जा सकता है। बैगा किसानों के खेतों में बिजली पहुंचाकर व कुंआ की खुदाई करवाकर कृषि भूमि में वृद्धि की जा सकती है। शुष्क जलवायु में शीघ्र तैयार होने वाली व कम वर्षा वाली फसलों के उन्नत बीजो का वितरण कर बैगा किसानों के उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। बैंगा कृषको को प्रशिक्षण देकर फसलों में होने वाले रोगों, कीटो एवं इनके उपचार की विधियों से अवगत कराया जा सकता है। इन्हें फसल चक्रण की विधि का महत्व समझाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। खेतो में मेड़ो का निर्माण कर भू–क्षरण को रोका जा सकता है। बालाघाट में चांवल की अच्छी किस्मों का उत्पादन किया जा सकता है क्योकि इस जिले की जलवायु चांवल की फसल के लिए उपयुक्त है।

3) पशुपालन में बैगा विकास की सम्भावनाएँ–
बैगा परम्परागत रूप से मुर्गा–मुर्गी एवं सुअर को पालते आये है। अब इनकी रूचि दुधारू पशुओं के पालन की तरफ बढ़ रही है। अध्ययन क्षेत्र के बैगा निवासरत् ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े भू–भाग पर वन व विस्तृत चारागाह फैले हुए है। बैगाओं को अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का वितरण कर दूध उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। प्रशिक्षण देकर बैगाओं को

पशुपालन की आधुनिक पद्धतियों का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। उत्पादित दूध को बैगाओं की सहकारी समिति बनाकर बाहर विक्रय किया जा सकता है। दूध के उपयोग से बैगा बच्चों में व्याप्त कुपोषण को दूर किया जा सकता है पशुओं से प्राप्त गोबर से गोबर गैस प्लान्ट का संचालन किया जा सकता है। गोबर गैस के उपयोग से जहाँ बैगा रसोई में सुविधा व धुंआ का अभाव होगा वही दूसरी ओर वनों पर ईधन के लिए बढ़ रहा दबाव कम होगा।

(4) हस्तकला में बैगा विकास की सम्भावनाएँ–

बैगाओं द्वारा परम्परागत रूप से हस्तकला वस्तुओं का निर्माण किया जाता रहा है। ये अपने देशज ज्ञान एवं औजारी से बांस, लकड़ी एवं मिट्टी से कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते है। बालाघाट के बैहर परिक्षेत्र में बांस की ही वस्तुएँ अधिक बनाते है। बैहर के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बैगा हस्तकला वस्तु में मुख्य रूप से बांस की कुर्सिया, टोकनी गुलदस्ते, खिलौने, सूपा व चटाई बनाते है। अच्छे औजारों के अभाव, कच्चे माल का अभाव व बाजार के अभाव के कारण इनकी हस्तकला वस्तुओं के निर्माण से अपार्याप्त आय हो पाती है। बैगाओं को प्रशिक्षण देकर इनकी हस्तकला को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। बैगाओ द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुओं का सहकारी समितियों के माध्यम से बाहर विक्रय किया जा सकता है। इस तरह हस्तकला वस्तु निर्माण वस्तु निर्माण के क्षेत्र में भी वैगा विकास की काफी सम्भावनाएँ है।

5) मधुमक्खी पालन में बैगा विकास की सम्भावनाएं–

बैगा विभिन्न वनोपज के साथ ही शहद का भी संग्रह करते आ रहे है। प्राकृतिक रूप से मधुमक्खी द्वारा प्राप्त शहद की मात्रा अनिश्चित होती है अतः इससे एक निश्चित आय की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती। जबकि मधुमक्खी पालन से एक निश्चित आय प्राप्त की जा सकती है। अध्ययन परिक्षेत्र में वृद्ध स्तर पर वनों के फैले होने से यहां पर बैगाओं द्वारा सरलता से मधुमक्खी पालन किया जा सकता है। जिससे बैगा परिवार अपनी आय में वृद्धि कर सकता है।

(6) रेशमकीट पालन में बैगा विकास की सम्भावनाएँ–

अध्ययन क्षेत्र के वनों में बड़ी संख्या में शहतूत के पेड़ पाये जाते है। इन पेड़ों का और अधिक रोपड़ कर, उनसे प्राप्त पत्तियों से रेशमकीट का पालन किया जा सकता है। उत्पादित रेशम के विक्रय से बैगा परिवार की आय में वृद्धि हो सकेगी। रेशमकीट पालन का बैगाओं को प्रशिक्षण देकर इसे एक प्रमुख आर्थिक आधार के रूप में विकसित किया जा सकता है।

(7) बागवानी मे बैगा विकास की सम्भावनाएँ–

बालाघाट परिक्षेत्र मे फलदार वृक्ष जल्दी तैयार हो जाते है। वैगा गांवों में खाली पढ़े भू–खण्डो को पट्टे पर बैगाओं को दिए जाने चाहिए। प्रशिक्षण देकर इन भू–खण्डों पर उन्नत किस्म के फलदार पौधे जैसे आम्, आमरूद, नीबू पपिता आदि का रोपड़ कर बगीचे तैयार किये जा सकते है।

(8) परम्परागत चिकित्सा पद्धति मे बैगा विकास की सम्भावनाएँ–

बैगा जनजाति का लम्बे समय से वनों में निवास होने के कारण ये लोग लगातार वनस्पतियों के संपर्क में रहे है। बैगाओं को जंगल से प्राप्त होने वाली अनेक जड़ी बूटियो का ज्ञान है। ये लोग इन जड़ी–बूटियों का उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार के लिए करते है। बैगाओ के जड़ी बूटियो एवं चिकित्सा पद्धति के ज्ञान का वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण कर उसे प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। बैगाओ के औषधीय ज्ञान को संरक्षित किया जाना चाहिए तथा इन औषधियों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के लिए औषधीय खेती को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। बैगाओं की परंपरागत चिकित्सा पद्धति का विकास कर नये रोजगार के अवसर में वृद्धि की जा सकती है।

(9) सहकारी विपणन समितियों के संचालन में बैगा विकास की सम्भावनाएँ–

बैगो द्वारा संग्रहित वनोपज, उत्पादित कृषि उपज, निर्मित हस्तकला वस्तुओं का विक्रय गाँव के ही व्यापारियों को कर देते हैं। ये व्यापारी इन सीधे–सादे बैगा लोगो से कम कीमत पर इन वस्तुओं को खरीदकर शहरो मे दुगुने दाम पर विक्रय कर लाभ कमाते है। व्यापारियों द्वारा बैगाओं का आर्थिक शोषण किया जाता है। बैगाओं की सहकारी विपणन समितियों का निर्माण कर बैगाओं द्वारा विक्रय किये जाने वाली समस्त सामग्रियों से उचित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही इन समितियों के लाभ से एक ऋण कोष का निर्माण कर बैगाओं को आवश्यकता होने पर कम दर पर ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है।

निष्कर्षः–

विकास की परंपराओं में आज भी बैगा जनजाति शैक्षणिक दृष्टि से पिछडे हुए हैं। आर्थिक रूप से कृषि मजदूरी करके जीवन निर्वाह करना होता है। वह विभिन्न विकास कार्यक्रमो के विभिन्न आयामों से अनभिज्ञ हैं और उनसे मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से आज भी वंचित हैं। शासन द्वारा बैगा समुदाय के उत्थान के लिए प्रयास करने का निर्णय लिया गया है। आदिवासी बैगाओं के विकास व उत्थान के लिए

गांव गोद लेने की प्रक्रिया की जा रही है, जिसमें उनके मूलभूत सुविधाओं से लेकर अन्य सभी समस्याओं का निराकरण के लिए प्रशासन द्वारा बालाघाट जिले के स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर मध्य प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा का विकास किया जा सकता है।

सुझाव–

1. प्रस्तुत शोध में रेखांकित की गई बैगा विकास की सम्भावनाओं को एक नियोजित कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
2. बैगा बहुल क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु बैगा विकास अभिकरण एवं अन्य विभागों को सामंजस्यपूर्वक कार्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालित करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–:

1. शर्मा, ब्रम्हदेव (2001) अर्थव्यवस्था के सीमान्त पर खड़े लोग दैनिक भास्कर, इन्दौर सितंबर
2. मिश्रा, शिवाकान्त (2002) मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति में सामाजिक, सांस्कृतिक, परिस्थितिकीय परिवर्तन एवं सामंजस्य की समस्याएँ शोध प्रबंध, बानीस महू
3. निरगुणे, बसंत (2006) संपदा, आदिवासी लोक कला आकादमी, भोपाल
4. उसरेठे, राम कुमार (2007) – बैगा जनजाति की वर्तमान दशा एवं भावी विकास की संम्भावनाओं का अध्ययन (बालाघाट जिले की बैहर तहसील के विशेष संदर्भ में) लघुशोध प्रबंध, बानीस, महू (म.प्र.)
5. चौरसिया, विजय (2009) प्रकृति पुत्र बैगा म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।